लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-15

शिवस्तोत्रावली

(भारतीय भक्ति-परम्परा के विभिन्न आयामों के संदर्भ में)

डॉ. सुषमा ज़ाडू जतू

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

नई दिल्ली

भूमिका

कश्मीर मण्डल अत्यन्त प्राचीन काल से भारतवर्ष के विद्वत्समाज का पथ-प्रदर्शक रहा है। इस तथ्य के प्रमाण हैं–इसका प्राचीन नाम शारदा देश एवं इसी प्रदेश की लिपि-शारदा। इस भूमि के सारस्वत साधकों की संख्या, कार्यक्षेत्र एवं कृतियाँ, सभी तथ्य चमत्कारी हैं। विद्या के सभी आयाम यहाँ प्रस्फुटित, पुष्पित एवं पल्लवित हुए। फिर बात चाहे दर्शन-शास्त्र की हो अथवा काव्यशास्त्र की, ऐतिहासिक ग्रन्थों की हो अथवा ललित काव्यों की, कश्मीर के आचार्यों ने विद्या का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं छोड़ा जिस पर उनकी वैचारिक छाप न हो। कश्मीर शैव-दर्शन भी इस स्थापना का अपवाद नहीं। कश्मीर के शैवाचार्यों ने शैव-दर्शन को अपने अकाट्य तर्कों एवं प्रातिभ विश्लेषण क्षमता द्वारा ऐसी दृढ़ पृष्ठभूमि प्रदान की इसमें अभिरुचि रखने वालों की संख्या, गंगा की अविरल धारा की भाँति बढ़ती ही जा रही है। परिणामतः केवल भारतवर्ष के ही नहीं अपितु विश्वभर के विद्वन्मण्डल में यह दर्शन जिज्ञासा, मीमांसा, शोध एवं अभिव्यक्ति रूपी उपादानों का पर्यायवाची बन गया है। इस दर्शन के आदिगुरु आचार्य वसुगुप्त हैं। आचार्य उत्पलदेव एवं आचार्य अभिनवगुप्त क्रमशः इसके पालक एवं पोषक कहे जा सकते हैं।

आचार्य उत्पलदेव के भक्तिपरक स्तोत्रों का संग्रह है– *शिवस्तोत्रावली।* आचार्य द्वारा भगवान् शिव के प्रति निवेदित भक्ति के विभिन्न आयाम इस ग्रन्थ का मुख्य विवेच्य हैं। यह रचना शैवभक्ति की सर्वाधिक सुन्दर एवं मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियों की अमूल्य शेवधि है। वैसे तो भारतीय भक्ति-परम्परा में संस्कृत स्तोत्रग्रंथों का प्राचुर्य है, पर उन सब में शिवस्तोत्रावली अन्यतम है। इसका एकमात्र कारण है– इसमें अक्षराकारित इसके स्रष्टा के संवेगों की तीव्रता एवं मुखरता। इस ग्रन्थ की रचना आचार्य उत्पल ने किसी सामान्य कवि की भाँति नहीं अपितु

विषय सूची

पुरोवाक्		iii-iv
भूमिका		v-viii
	प्रथम अध्याय	
	शिवस्तोत्रावली : कृति एवं कृतिकार	**1-11**
i	ग्रन्थ - परिचय	1-3
ii	ग्रन्थकार - परिचय	3-5
iii	कृति का दार्शनिक मूल्यांकन	5-11
	द्वितीय अध्याय	
	भक्ति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	**12-38**
i	वेदों में भक्ति	12-14
ii	उपनिषदों में भक्ति	14-17
iii	ऐतिहासिक महाकाव्यों में भक्ति	17-24
iv	पुराणों में भक्ति	24-30
v	लौकिक संस्कृत साहित्य में भक्ति	30-33
vi	भारतीय साहित्य शास्त्र में भक्ति	33-35
vii	कश्मीर में भक्ति-परम्परा	35-36
viii	कश्मीर शैव दर्शन में भक्ति	36-28
	तृतीय अध्याय	
	भक्ति के विभिन्न सम्प्रदाय	**39-63**
i	वैष्णव भक्ति	39-44
ii	शैव भक्ति	44-51
iii	स्मार्त भक्ति	51-52
iv	नवधा भक्ति	53-57

जिन्हें 'वृत्ति' नाम दिया गया है। ईश्वरप्रत्यभिज्ञा की वृत्ति पर उन्होंने एक विवृत्ति नाम की विस्तृत टीका भी लिखी थी, परन्तु अभी तक वह कहीं भी उपलब्ध नहीं हो सकी है।[1] 'ईश्वरप्रत्यभिज्ञा पर आचार्य अभिनवगुप्त द्वारा लिखी गयी विमर्शिनी नामक विस्तृत टीका ने ईश्वरप्रत्यभिज्ञा को कश्मीर शैव-दर्शन का अद्वितीय शास्त्र बना दिया है। इस ईश्वरप्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी की जितनी प्रशंसा की जाए वह थोड़ी है। आचार्य अभिनवगुप्त के अनुसार, "शेष दर्शन शास्त्र इसके सामने चिड़ियों की चहचहाहट से अधिक मूल्य नहीं रखते और शेष सभी शास्त्रों का समन्वय और आत्महित के लिए उनकी उपयोगिता इसी शास्त्र के द्वारा सिद्ध होते हैं।[2] आचार्य उत्पलदेव की अप्राप्य टीका पर भी आचार्य अभिनवगुप्त ने एक 'विवृति-विमर्शिनी' नामक विस्तृत टीका लिखी है।

इस प्रकार आचार्य उत्पलदेव एक उच्चकोटि के दार्शनिक और टीकाकार होने के साथ-साथ एक प्रभावशाली कवि भी थे, जिसका परिचय हमें शिवस्तोत्रावली नामक पद्यात्मक ग्रन्थ से मिलता है। शिवस्तोत्रावली भगवान् शंकर की स्तुति में लिखे गए भक्तिपूर्ण पद्यों का संग्रहात्मक ग्रन्थ है।

कृति का दार्शनिक मूल्यांकन

शिवस्तोत्रावली कश्मीर शैव-दर्शन की एक भक्तिपूर्ण रचना मानी जाती है। इसमें भगवान् शंकर की स्तुति की गई है, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु इसमें न केवल भगवान् शंकर की स्तुति ही की गई है अपितु इसमें उत्पलदेव द्वारा अनुभव की गई परमशिव की अनुभूति (साक्षात्कार) का भी वर्णन है। आचार्य उत्पलदेव चूंकि कश्मीर

---

1. डॉ॰ के॰ सी॰ पाण्डेय "अभिनवगुप्त : ऐन हिस्टोरिक्ल एण्ड फिलोसॉफिकल स्टडी", पृष्ठ–163
2. "कल्पान्ताम्बुनिधेः प्रचण्डपवनप्रक्षोभितैर्वानल-
ज्वालाजालमिलत्तरंगवलनानश्यत्कुलक्ष्माभृतः।
भूयानप्यवगाहनाय प्रभवेन्नत्वीश्वराभिज्ञया।
निर्णीतस्य विधेर्विमर्शविषये शक्तः परः शंकरात्।।"
–ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

मानित विश्वविद्यालय

(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी

नई दिल्ली-110058